हिमाचल प्रदेश विधान सभा

विधान सभा की बैठक शुक्रवार, दिनांक 15 फरवरी, 2019 को माननीय अध्यक्ष, डॉ. राजीव बिन्दल की अध्यक्षता में कौंसिल चैमबर, शिमला-171004 में 11.00 बजे पूर्वाह्न आरम्भ हुई।

शोकोद्गार

अध्यक्षः 14 फरवरी, 2019 को 3:15 बजे अपराह्न जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल के काफिले पर बर्बरतापूर्ण आत्मघाती हमले में शहीद हुए जवानों के सम्मान में माननीय मुख्य मंत्री महोदय शोकोद्गार प्रस्तुत करेंगे।

मुख्य मंत्रीः माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले कल दिनांक 14.02.2019 को जम्मू-कश्मीर में सी.आर.पी.एफ. की 78 गाड़ियों का काफिला जो जम्मू से श्रीनगर की ओर जा रहा था और उस काफिले में 2500 से अधिक जवान थे। मुझे इस सदन में यह सूचित करते हुए दुःख हो रहा है कि जम्मू-कश्मीर हाई-वे पर पुलवामा जिला के लेथपोरा में सी.आर.पी.एफ. की 54वीं बटालियन की गाड़ी को निशाना बनाया गया जिसमें 42 जवान शहीद हुए तथा 20 अन्य जवानों के घायल होने की सूचना है।

इस घटना में सी.आर.पी.एफ. के जवान श्री तिलक राज पुत्र श्री लायक राम, निवासी देवा (Dhewa), तहसील ज्वाली, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश, जो हाल ही में 11 फरवरी, 2019 को घर से छुट्टी काट कर गया था, भी शहीद हो गया। घटना जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर नेशनल हाई-वे पर अपराह्न सवा तीन बजे की है। फिदायनी हमलावर ने विस्फोटक भरी कार को काफिले की बस से टकरा दिया जिसके विस्फोट से बस के परखचे उड़ गए। चारों ओर बस के टुकड़े तथा मलवा पड़ा नजर आ रहा था। इस हमले की जिम्मेवारी आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने ली है। पुलिस द्वारा आत्मघाती वाहन को चला रहे मानव बम की शिनाख्त कर ली गई है। उस आतंकवादी का नाम आदिल अहमद डार है जो पुलवामा जिला के काकापोर इलाके का रहने वाला है। वह वर्ष 2018 में आतंकी संगठन जैशे-ए-मोहम्मद में शामिल हुआ था। घटना के तुरंत बाद सेना, पुलिस और सी.आर.पी.एफ. के आला अधिकारी मौके पर पहुंचे और घटना स्थल को सील कर स्थिति का जायजा लिया। सुरक्षा बलों द्वारा आसपास के इलाकों में बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान भी चलाया जा रहा है। पुलिस ने इस मामले में जांच शुरू कर दी है। घटना स्थल पर फौरैंसिक तथा बम निरोधक दस्ते की टीम भी पहुंच गई है और साथ ही सारे इलाके को घेर कर लोगों से पूछताछ की जा रही है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस घटना ने पूरे देश को हिला कर रख दिया है। हम सब लोगों की रक्षा के लिए, इस देश की रक्षा के लिए जो जवान रात-दिन काम करते हैं निश्चित रूप से उनके हौंसलों को तोड़ने के लिए बड़ी गहरी साजिश हुई है। मैं इस बात से भी सहमत हूं कि इस घटना को अंजाम देने में किसी और का कार्य नहीं अपितु हमारे ही पड़ोसी देश पाकिस्तान का कार्य है। मैं सुबह टी.वी. पर समाचार देख रहा था, उसमें पाकिस्तान ने इस हमले में अपने शामिल होने का खंडन किया है। लेनिक अध्यक्ष महोदय इन सब बातों का कोई अर्थ नहीं। आज आदरणीय प्रधान मंत्री जी की अध्यक्षता में दिल्ली में बहुत महत्वपूर्ण बैठक चल रही है। आज पूरे देश भर से एक बात को ले करके एक स्वर में आवाज उठ रही है कि पाकिस्तान के खिलाफ कठोर और कड़ी-से-कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। यह आवाज चारों ओर से सुनाई दे रही है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भी इस माननीय सदन के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करता हूं कि यह प्रदेश आदरणीय प्रधान मंत्री जी के साथ है और जिस प्रकार की यह घटना घटित हुई है, इस घटना का मुंहतौड़ जवाब पाकिस्तान को देने की आवश्यकता है। उसमें हमारा प्रदेश माननीय प्रधान मंत्री जी के साथ चट्टान की तरह खड़ा होगा। जो पूरे देश की लोगों की भावना है, वहीं भावना पूरे हिमाचल प्रदेश की भी है।

मैं कल शाम इलैक्ट्रानिक मीडिया, प्रिंट मीडिया और सोसल मीडिया देख रहा था, आम आदमी बोल रहा है कि अब बहुत हो लिया, अब बहुत बर्दाश्त करने की स्थिति नहीं है। मैं उम्मीद करता हूं कि हमारे देश का नेतृत्व बहुत सक्षम नेतृत्व है। वह सारी बातों को विचार करने के बाद जो निर्णय लेगा, उस निर्णय में हम अपने को उनके साथ खड़ा पाएंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक बार फिर से जो जम्मू-कश्मीर में पिछले कल सी.आर.पी.एफ. के जवानों के ऊपर आतंकवादी हमला हुआ है उसकी भर्त्सना करता हूं। वह दृश्य इतना भयावह था कि उसको देखने से रौंगटे खड़े हो जाते हैं। आदमी की बात तो छोड़िए उस सारे दृश्य को देखें तो जिस बस के साथ गाड़ी को टकरा कर हमला किया है

उस बस का भी कुछ नहीं बच पाया है। मात्र कुछ पुर्जे ही देखने को मिल रहे हैं । समाचारों के माध्यम से मालूम पड़ रहा है कि 200 किलो से ज्यादा उसमें विस्फोटक इस्तेमाल हुआ है। माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वाभाविक रूप से हमारे देश को अस्थिर करने की ताकतें जो वर्षों से इस प्रकार के कार्य को अंजाम देने की बात कर रहे हैं, वे कभी कामयाब नहीं होंगी। जितने भी हमारे जवान शहीद हुए हैं मैं उनके प्रति अपनी सांत्वना और श्रद्धांजलि देता हूं।

15.02.2019/1110/DT/YK/-1

ईश्वर उनके परिवारजनों को इस दुःख की घड़ी में इस दुःख को सहन करने की हिम्मत दें।

हिमाचल प्रदेश के जवान, श्री तिलक राज सुपुत्र श्री लायक राम जिनकी पुष्टि हो चुकी है, मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ-साथ उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने के लिए प्रार्थना करता हूं, भगवान उनको इस सदमे को सहन करने की शक्ति दें। मैं हिमाचल प्रदेश सरकार की ओर से उन्हें 20.00 लाख रुपये एक्सग्रेशिया ग्रांट के रूप में देने की भी यहां पर घोषणा करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक बार फिर से इस कायराना हरकत के लिए जिसको आतंकवादियों ने अंजाम दिया, उसकी कड़े शब्दों में निंदा करता हूं। इसके साथ ही शहीद परिवारों के प्रति सांत्वना देते हुए जो जवान शहीद हुए उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री मुकेश अग्निहोत्री (हरोली): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी ने बीते कल जो आतंकवादी घटना घटित हुई, इसमें मैं कांग्रेस विधायक दल को भी शामिल करता हूं। श्रीनगर के नजदीक पुलवामा में अवंतिपुरा के गौरीपुरा इलाके में जो घटना घटित हुई, उस घटना ने राष्ट्र के सामने बहुत बड़ी चुनौती दी है। जैश-ए-मोहम्मद आतंकी संगठन ने मानव बम को अपनाते हुए सी0आर0पी0एफ0 के काफिले पर हमला

किया और इसमें हमारे 42 के करीब जवान शहीद हुए हैं। इसमें काफी लोग घायल भी हुए हैं। इससे पहले भी 18 सितम्बर, 2018 को उड़ी सैक्टर में सेना के मुख्यालय पर हमला हुआ था लेकिन यह उससे भी बड़ी घटना घटित हो गई है। उड़ी घटना की पूरे राष्ट्र में चर्चा एवं घोर निंदा हुई और राष्ट्र में आक्रोश फैला क्योंकि उसमें सेना के मुख्यालय पर हमला हुआ था और 20 जवान उसमें शहीद हो गए थे। उसके दो-अढ़ाई साल के बाद फिर से सैनिकों को निशाना बनाया जा रहा है जिसमें 42 लोग शहीद हो गए हैं। आतंकवादी लगातार सैनिक मुख्यालयों व ठिकानों और सेना को अपना निशाना बना रहे है। यह बहुत बड़ी चिंता की बात है कि जो लोग हमारी और राष्ट्र की सुरक्षा कर रहे हैं, इस समय आतंकी संगठनों का सारा निशाना सुरक्षा बल हो चुके हैं। माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि इसमें पाकिस्तान का हाथ है। यह तो जाहिर सी बात है। जम्मू कश्मीर के राज्यपाल ने कहा कि खुफिया एजेंसियों ने अर्लट जारी किया था उसके बाद भी यह घटना घटित हो गई। जे0एण्ड0 के0 में तो अब सीधा-सीधा केन्द्र का नियंत्रण है क्योंकि वहां से चुनी हुई सरकार को हटा दिया गया था

15-02-2019/1115/वाई.के./एन.जी./1

यह देखते हुए कि वहां पर खतरा बढता जा रहा है । यह दलील दी गई है कि सुरक्षा में बडी चूक हुई है, वहां के राज्यपाल जी ने ऐसा कहा है । अध्यक्ष महोदय, ये जो आतंकवादियों का तांडव हो रहा है और ये वहीं लोग हैं जिन्हें हम कन्धार छोड कर आए थे । जिन्होने संसद पर हमला किया, जिन्होने पठानकोट ऐयरबेस पर हमला किया, ये लोग लगातार देश को अस्थिर करने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसी ताकतें लगातार चुनौतियां दे रही हैं चाहे वह कोई भी आतंकी संगठन क्यों न हो । आज तो अखबारों में लम्बी चौडी सूची आई है कि कितनी वारदातों को ये अंजाम दे चुके हैं । माननीय मुख्यमन्त्री जी ने जैसे कहा कि आदिल अहमद डार उर्फ विकास यह मोस्ट वान्टेड आतंकी है । उसने पूरी गाडी सुरक्षा बलों के काफिले में मार कर उसके बाद विडियो भी जारी किया है । इसलिए चुनौती का समय है, पूरे देश में जहां निन्दा हो रही है वहीं आक्रोश का वातावरण है । इनसे सख्ती से निपटा जाना चाहिए । हमारे प्रदेश के कई जवान शहीद हो रहे हैं, इस घटना में भी कांगडा के

शहीद तिलक राज जी, जोकि ज्वाली से हैं, वो अभी छुट्टी काट कर वापिस गए थे और इस काफिले में थे, वो भी शहीद हो गए हैं । जो सभी जवान शहीद हुए हैं जहां हम उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं वहीं इस माननीय सदन के माध्यम से हम पूरे राष्ट्र से कहना चाहते हैं कि हम देश की सेनाओं के साथ हैं, दुःखी परिवारों के साथ हैं । हम जहां शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं वहीं घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो ऐसी कामना करते हैं । केन्द्र सरकार से आग्रह करते हैं कि इस मामले को गम्भीरता से लें और खास तौर पर सैन्य ठिकानों और सेनाओं की सुरक्षा के लिए व्यापक कदम उठाए जाएं । जो लोग, जो ताकतें देश को चुनौती दे रहे हैं उनको मूहं तोड जवाब दिया जाए । अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने के लिए समय दिया आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ।

अध्यक्ष : माननीय सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मन्त्री श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर जी ।

सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मन्त्री : अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता माननीय मुख्यमन्त्री जी ने जो शोक प्रस्ताव उन महान शहीदों के प्रति रखा है उसमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं । आतंकवादियों ने किसी देश के सहारे जो एक कायराना हरकत की है और हमारे अर्धसैनिक बलों, सीआरपीएफ के जवानों के ऊपर हमला किया है ।

पाकिस्तान को मैं याद दिलाना चाहता हूं कि वो 1948 को भूल रहा है, 1965 की लडाई को भूल रहा है, 1971 के युद्ध को भूल रहा है और 1999 का अघोषित युद्ध हुआ था उसको भूल रहा है। अध्यक्ष महोदय, 1965 का युद्ध हुआ, पाकिस्तान को जिस प्रकार से भारतीय सेनाओं ने उसके देश के अन्दर जा कर के किस प्रकार से लताडा था, किस प्रकार से उनको सबक सिखाया था । 1971 में पाकिस्तान का

जो बहुत बड़ा हिस्सा पूर्वी पाकिस्तान के रूप में था, वह आधा पाकिस्तान ही उसके हाथ से चला गया था। इतना बड़ा नुकसान होने के बावजूद भी वह अपनी हरक़तों से बाज नहीं आ

रहा है। उसने वर्ष 1999 में कारगिल में अघोषित युद्ध कर दिया और उसमें भी उसको मुंह की खानी पड़ी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, वर्ष 1971 की लड़ाई में मुझे भी मौका मिला और मैंने 1971 की लड़ाई लड़ी है। मैं डोगरा रेजिमेंट का एक सैनिक था और आज का बांग्लादेश और उस समय का पूर्वी पाकिस्तान था, दो महीने तक लगातार मुक्ति वाहिनी के रूप में और उसके बाद 15 दिन जब वह युद्ध घोषित हो गया, 1 दिसम्बर से लेकर 15 दिसम्बर, 1971 तक, तो उस समय मैंने पाकिस्तान की सेना को देखा है और हमने उनको खदेड़ा ही नहीं, उनको मारा है, हमने उनको मारा ही नहीं है, बल्कि 91,000 पाकिस्तान के सैन्य अधिकारियों और उनके जवानों ने हमारी सेना के सामने आत्म-समर्पण किया था। जैसे ही हम कोश्तिया से आगे हार्डिंग ब्रिज पर पहुंचे, उन्होंने 14 दिसम्बर, 1971 को आत्म-समर्पण कर दिया। मेरी बटालियन को आदेश हुआ था कि अब आप छमजोड़ियां जाएंगे।

माननीय अध्यक्ष जी, दिनांक 15 दिसम्बर, 1971 को सीज़ फायर हो गया। हमसे उस समय कुछ चूक हुई। यदि हम थोड़ा सा, चार दिन और आगे बढ़ जाते तो आज यह मसला ही सैटिल हो जाना था। लेकिन आज वह क़ायराना हरक़तें कर रहा है, अपने आप सामने नहीं आ रहा है और आतंकियों को श़ह दे रहा है। वर्ष 1999 में भी ऐसा हुआ। जब उसने ऐसा किया था तो उस समय भी उसको मुंह की खानी पड़ी थी। आज जो क़ायराना हमला उसने हमारे सी.आर.पी.एफ. के जवानों पर किया है, इससे आज देश का बच्चा-बच्चा पाकिस्तान के ख़िलाफ है। जितनी भी बड़ी-बड़ी ताकतें अमरीका, फ्रांस, रशिया आदि हैं, उन्होंने इस हमले की निन्दा की है और विश्व के बहुत से देशों ने इस हमले की निन्दा की है। वहीं इस हमले के दौरान जिन्होंने महान शहादत दी है जो हमारे 42 जवान हैं, कई 42 कहते हैं और कई चैनलों पर 44 आ रहा है और हमारे अर्ध-सैनिक बलों के बहुत से जवान घायल हैं, यहां उन महान शहीदों के प्रति माननीय मुख्य मंत्री जी की तरफ से श्रद्धा के सुमन अर्पित किए जा रहे हैं, उसमें हम सब शामिल हैं। वहीं आज उनके परिवारजन के साथ भी देश का बच्चा-बच्चा और देश का हर नागरिक उनके साथ खड़ा है।

माननीय प्रधानमंत्री जो भी फैसला लेंगे और वे बहुत जल्दी ही कुछ-न-कुछ फैसला ले रहे हैं। मैं यहां एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि जो मैंने 1971 की लड़ाई लड़ी है, वहीं अगर आवश्यकता पड़ी तो मैं अपने आपको उस रणभूमि में जाने के लिए दुबारा से तैयार हूं। लेकिन पाकिस्तान अपनी क़ायराना हरक़त छोड़े दे अन्यथा इसके बहुत गंभीर और दुष्परिणाम होंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपने आपको सदन के नेता के शोक प्रस्ताव में शामिल करता हूं। आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष : अब श्री राकेश सिंघा जी इस शोक प्रस्ताव की चर्चा में भाग लेंगे।

श्री राकेश सिंघा : माननीय अध्यक्ष महोदय, यह वाकई आज बहुत दुखद समय है। सदन के नेता माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने जो शोक प्रस्ताव आज इस सदन में पेश किया, मैं भी उसमें शामिल होने के लिए खड़ा हुआ हूं।

15/02/2019/1125/MS/AG/1

और दिल से कह रहा हूं कि वास्तव में ही मेरे लिए यह बहुत दुःखद समय है और ऐसी दुःखद घड़ी में मैं उन सभी शहीदों के परिवारों के साथ खड़ा होना चाहता हूं तथा उनको ताकत देना चाहता हूं जोकि एक बहुत बड़ा नुकसान उनके परिवार को हुआ है। यह बात सही है कि वर्ष 1989 के बाद यह सबसे बड़ा आतंकी हमला हुआ है और मैं सोचता और समझता हूं कि violence is no solution. कोई भी विवाद हो, कोई भी मतभेद हो या कोई भी ओपियन हो, एक सिविलाइज्ड सोसाइटी में violence has no place. हमारे देश ने आजादी के बाद इस तरह के आंतकी हादसे को भुगता है जिसमें हमने अपने दो प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी और श्री राजीव गांधी खोए हैं। Both of them were victims of violence. जो यह वायलैंस है और खासतौर पर आतंकी वायलैंस है, इसके पीछे कोई सैंसेब्लिटी नहीं होती है। लेकिन ऐसे कठिन समय में हमें बहुत धैर्य के साथ आगे बढ़ना है। मैं समझता हूं कि किसी भी घटनाक्रम के दुनिया में अनेक कारण होते हैं लेकिन इंटरनल कारण हमेशा महत्वपूर्ण होते हैं। ऐसा नहीं

है कि हमारी कमजोरियां नहीं रही हैं क्योंकि हमारी कमजोरियों का ही फायदा दुश्मन उठाता है। इसलिए मैं समझता हूं कि इसका समाधान इस फ्रेमवर्क के अंदर निकालना है जो हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने तीन साल पहले यह कहा था कि इस मसले का हल करने के लिए सभी स्टेक-होल्डर्ज को शामिल करना है। मैं समझता हूं कि कुछ कमियां रही होंगी और उनको पूरा करना है लेकिन violence can never be a solution. जो भी वायलैंस करना चाहता है उसको यह बताना होगा कि हमारे देश की रक्षा करने के लिए जो नौजवान आगे आते हैं, उनकी जान लेने का यह तरीका नहीं हो सकता है। इस दुःखद घड़ी में मैं पुनः अपने आपको शामिल करता हूं और यह बहुत ही अच्छा काम हमारे मुख्य मंत्री महोदय ने किया है। यह हमारी नीति है कि जो भी इस राज्य से संबंधित नौजवान शहीद होगा, उसे श्रद्धाजलि देंगे। मैं जानता हूं कि जो नौजवान फौज में जाते हैं वे सब गरीब परिवारों से होते हैं। उनका ज़मीन से गुजारा नहीं होता है इसलिए वे फौज में शामिल होते हैं। उनकी सहायतार्थ मैं बहुत छोटी सी राशि माननीय मुख्य मंत्री महोदय को दे दूंगा। वे मेरी ओर से उस राशि को अन्य लोगों द्वारा दी गई राशि में जोड़ लें। उस राशि को यहां एनाउंस करने की कोई जरुरत नहीं है। मैं दिल से इस राशि को दे रहा हूं। मैं कामना करता हूं कि देश में अमन रहे, शांति रहे और एक ऐसे निर्णय पर हमारा देश आए जिससे कोई समाधान हो, न कि यह विवाद और ज्यादा बढ़े। इसी के साथ मैं आपका बहुत-बहुत शुक्रगुज़ार हूं कि आपने मुझे शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि देने के लिए मौका दिया। मैं तहेदिल से एक बार पुनः अपनी ओर से श्रद्धांजलि प्रकट करता हूं।

श्री वीरभद्र सिंह(अर्की)ः माननीय अध्यक्ष महोदय, भारत की सीमा के अंदर यह बहुत ही दुःखद घटना घटित हुई है। इस घटना में हमारे सी0आर0पी0एफ0 के काफी जवान शहीद हुए हैं और इस घटना से सारा देश आहत है। माननीय अध्यक्ष जी, यह घटना कोई सरहद पर नहीं हुई है या सरहद के नज़दीक नहीं हुई है बल्कि यह घटना श्रीनगर से कुछ ही दूरी के फासले पर पुलवामा में घटित हुई है। इसका मतलब यह है कि अभी हमारी जो सीमाएं हैं, वे सुरक्षित नहीं हैं।

इस सारे-के-सारे फिदायीन हमले में लोग मर गए। वह टुकड़ी जम्मू से श्रीनगर जा रही थी। बॉर्डर पर डियूटी करने को वापिस जा रहे थे। भारत के अन्दर, जम्मू-कश्मीर के अन्दर बॉर्डर पर यह हादसा नहीं हुआ है इसलिए यह और भी गम्भीर विषय की बात है। आज तक यह कोई पहला हमला उस संगठन का नहीं है, इससे पहले भी वे कई बार घुसपैठ करते आए हैं। मुझे खुशी है, फ़ख है कि हमारी बहादुर सेना और हमारे जो दूसरे सैनिक दल है, वे जोश के साथ, हिम्मत के साथ उनका मुकाबला करते आए हैं। बॉर्डर पर तो झड़पें होती रहती हैं, थोड़ी-बहुत घुसपैठ होती रहती हैं मगर जम्मू-कश्मीर कैपिटल से 15 किलोमीटर के ऊपर यह घटना हुई यह बड़ी दुख की बात है।

इसमें ज्यादा न कहते हुए मेरे से पूर्व वक्ताओं ने जो यहां पर बातें की, उनमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन आत्माओं को शांति प्रदान करें। हमें अपने शहीदों पर फख है जिन्होंने देश की खातिर अपनी जान दे दी ।

मरने वालों में एक ज़वान हिमाचल का भी था और माननीय मुख्य मंत्री जी ने जैसे कहा है, उनके सम्मान में धनराशि देने की घोषणा की है, वह सही कदम है। हमें अपनी सेना के ऊपर और विभिन्न सैनिक दलों के ऊपर, सशस्त्र सेना के ऊपर फख है, वे अपनी जान को खतरे में डालते हुए हमारे देश की सेवा करते हैं। धन्यवाद।

श्री इन्द्र सिंहः(सरकाघाट)ः माननीय अध्यक्ष जी, पिछले कल पुलवामा में हुए सी0आर0पी0एफ0 की कॉन्वाई (Convoy) पर कायराना हमले में शहीद हुए ज़वानों को श्रद्धांजलि देने इस माननीय सदन में, माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो शोकोद्गार प्रकट किया है, उसमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि भगवान उन शहीदों को, उनकी आत्माओं को शांति प्रदान करें और उनके परिजनों को इस त्रासदी को सहनें की ताकत दें।

अध्यक्ष महोदय, मैंने घाटी में 1992 से 1994 तक सर्विस की है। इस प्रकार की डिवाइस कभी आतंकवादियों ने इस्तेमाल नहीं की थी। यह पहला समय है जब लोडिड व्हीकल कॉन्वाई से टकराई है।

15-02-2019/1135/SS-DC/1

इससे पहले आई0ई0डी0 का इस्तेमाल होता था। हम सड़कों पर चल करके रोड की सैनीटाइजेशन करते थे और उसके बाद कॉन्वाइ (Convoy) चलती थी। यही प्रक्रिया यहां भी हुई है। लेकिन इतनी बड़ी संख्या में जहां 2547 जवानों की कॉन्वाइ जा रही हो तो दो गाड़ियों के बीच में तीसरी गाड़ी का इंडक्ट होना बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है। कहीं-न-कहीं कोताई तो हुई होगी। जो इंक्वायरी होगी, उसमें सब साफ आ जायेगा। जिस बस से टकराये, उसमें 59 जवान सवार थे। उसमें 42 जवान शहीद हुए। यह बहुत ही डिस्गस्टिंग सिचुऐशन है, इसमें कोई शक की बात नहीं है। लेकिन मैं सदन में यह भी कहना चाहता हूं कि न वह गाड़ी पाकिस्तान से आई थी और न वह एक्सप्लोसिव पाकिस्तान से आया था, वे सब इंडियन थे। पाकिस्तान के अगेंस्ट कोई फ्रदर कार्रवाई करनी है, वह अलग बात है। लेकिन जो घर में बैठे जयचन्द हैं, उनके बारे में आज सोचने की सख्त ज़रूरत है। मैं ऐसा समझता हूं।

हमारा एक जवान ज्वाली (कांगड़ा) से शहीद हुआ है। उनके परिवार के लिए माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो सहायता दी है उसके लिए मैं माननीय मुख्य मंत्री जी का धन्यवाद करता हूं। यह एक सराहनीय कदम है। हम उस आत्मा को वापिस तो नहीं ला सकते लेकिन इस रूप में उसके परिवार को कुछ कम्पनसेशन दे सकते हैं। वह बहुत सराहनीय कदम है। इतनी बड़ी गाड़ियों का काफ़िला जाना और बीच में किसी दूसरी गाड़ी का आना संदेहास्पद है। क्योंकि जब फौज में ट्रैवलिंग होती है, गाड़ियां चलती हैं तो हैड टू टेल चलती हैं, बीच में कोई ज्यादा गैप नहीं होता है। इसके बीच में कोई गाड़ी चली गई तो निश्चित रूप से कोई-न-कोई बीच में मूवमैंट की लगातार इंफोरमेशन देता रहा होगा कि कॉन्वाइ कहां खड़ी होनी है, बीच में ड्राईवर लोग रैस्ट भी करते हैं तो उसका भी उनको पता था। साथ में उसके बाद जो फायरिंग हुई तो इसका मतलब है कि मिलिटैंट वहां डिप्लॉयड थे। निश्चित रूप से कहीं-न-कहीं कोताई हमारे लेवल पर हुई है, यह होना नहीं

चाहिए था। अंत में मैं पुनः दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी श्रद्धांजलि देता हूं और साथ में ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि their soul may rest in peace और जहां यह नुकसान हुआ है, भगवान् उनके परिवारजनों को इस त्रासदी को सहन करने की शक्ति दे। जो जवान घायल हैं, मैं उनकी अरली रिकवरी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

माननीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्षः अब कर्नल धनी राम शांडिल जी अपने उद्गार रखेंगे।

डॉ0 (कर्नल) धनी राम शांडिल (सोलन): माननीय अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता, माननीय मुख्य मंत्री महोदय; प्रतिपक्ष के नेता, श्री मुकेश अग्निहोत्री जी; हमारे सीनियर लीडर्ज़; हमारे सैनिक कल्याण मंत्री; हमारे पूर्व मुख्य मंत्री, राजा वीरभद्र सिंह जी; कर्नल इंद्र सिंह जी और राकेश सिंघा जी ने जो विचार व्यक्त किए हैं उससे सचमुच में हमारे आहत देश को हमारी भावनाओं की तरंगे पहुंची होंगी। मैं समझता हूं कि yesterday was a 'black day' for our Security Forces and for our Country. कर्नल इन्द्र सिंह जी ने जो ऑब्जर्वेशन्ज़ दी हैं वे बड़ी महत्वपूर्ण हैं कि जो हमारे बीच के दुश्मन हैं वे कभी-कभी ज्यादा जिम्मेवार होते हैं in such scenarios which we have faced yesterday. In fact we must call it a proxy war and an undeclared war. मैं तो स्वयं सियाचीन में भी रहा हूं। अखनूर में भी रहा हूं। गुलमर्ग और पुलवामा के अगले क्षेत्रों में हमारी सिक्योरिटी फोर्सिज़ रही हैं। मैं उरी क्षेत्र में भी रहा हूं। इन्होंने ठीक कहा कि कभी भी बिना सिक्योरिटी ड्रिल के कॉन्वाइ नहीं चलती। हमारे सभी नेताओं ने खासकर जो सैनिक कल्याण मंत्री ने उद्गार व्यक्त किये, बहुत अच्छी बात है कि अगर ज़रूरत पड़ी तो हम भी अपने आपको इस काम के लिए प्रस्तुत कर सकते हैं। No doubt these are very good sentiments. मैंने कुछेक बातें अपने पिछले भाषण में कही थीं कि 1962, 1971 और 1975 में, whether we are from any ideology or thinking, हमारा देश इकट्ठा था

15.2.2019/1140/केएस/एचके/1

और अब भी है। मुझे प्रसन्नता है कि हमारे सदन के नेता ने इन भावनाओं को उजागर किया है। डैफिनेटली रिटैलिएशन की भावना आती है और ऐसे समय में जबकि 42 लोगों की कैजुअल्टीज़ हों, it seems to be a very serious matter. The Hon'ble Members, those who have been in the Forces, they have seen that even on a core attacks such heavy causalities of such magnitude do not occur. 42 is a very large number of casualties. It is a small episode of move under convoy. It is a core attack which took place, then we have some 40-50 causalities. It is a serious matter and I feel कि 200 किलोग्राम आर.डी.एक्स का जो इस्तेमाल किया गया, और मैं तो स्वयं एविडैंस था जब 13 दिसम्बर, 2001 को पार्लियामैंट पर हमला हुआ था। जनरल **रॉय** चौधरी ने मुझे कहा 'Dhani, go straight to the Office Room'. मैंने कहा Sir, how can I go, firing is going all around. He asked, is it a real firing? मैंने कहा, Yes, Sir, it is a real firing. Then I went to a particular room i.e. the security room of the Parliament and then informed the Officers in the Operation Room, that Operation Room is opposite to the Parliament House. I told them "it is a real attack, please close the Operation Room, because that is the lifeline of our Country and I remember at that time we were taken back. How, in a secure place like the Parliament, terrorist can attack. These kind of cowardly attacks have been coming to us and we are facing them and then we woke up and today, I think, it is almost six times higher security zone the Parliament having.

Mr. Speaker, Sir, in my last speech I had described one or two lines on a Soldier "Who is a soldier? Soldier does, what no one else can do, a Soldier reaches there, where no one else can reach, a Soldier can turn an impossible thing into possible thing. Hence, We Salute a Soldier". One of the martyr soldier belongs to our State and as Shri Thakur Mahender Singh Ji and Shri Rakesh Singha Ji has said if there is anything that we have to do for his family,

we are ready to do. Towards the end, I will only say that war can never be a solution but they say if you want peace, be prepared for war. So, we all have to prepare ourselves for the war and in this regard I suggest as I use to say in Parliament also that minimum one year training should be given to each department so that everyone learns about what is security and how can we secure ourselves and our Country. I also pay homage to all the departed souls and also bare this loss with the families of these 42 soldiers. I pray from God that this thing doesn't happen again and we all are secure and safe in our Country. Thank you.

अध्यक्षः श्री राकेश पठानिया जी।

श्री राकेश पठानियाः माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदन के नेता आदरणीय मुख्य मंत्री जी ने जो शोक प्रस्ताव यहां लाया है, मैं भी उसमें अपने आप को शामिल करता हूं। आप सभी ने जो विचार रखे, मैं तो केवल जो हमारे क्षेत्र से तिलक राज, गांव जंदरोह धेवा शहादत को प्राप्त हुआ है। उसकी धर्मपत्नी सावित्री है। वे मेरे क्षेत्र के बिल्कुल बॉर्डर पर है। उनका बड़ा बेटा वरुण कपूर 2 साल का है और छोटा बेटा आज सिर्फ 30 दिन का हुआ है। हमारे क्षेत्र में इस वक्त बड़े शोक की लहर चल रही है। एक 30 साल का जवान आज देश के लिए शहीद हुआ है, हम उसको नमन करते हैं। मैं भी एक फौजी परिवार से आता हूं। जिस इंसिडैंस की बात ठाकुर महेन्द्र सिंह जी कर रहे हैं,

15.2.2019/1145/av/hk/1

इनके साथ ही मेरा बड़ा भाई , 8 डोगरा रेजिमैंट में एक एम्बुश में घायल हुआ था, वे कर्नल साहब (कर्नल धनी राम शांडिल) की रेजिमैंट में थे और उसी दिन मेरे पिता जी ढाका में थे। मैंने कल रात खाना भी नहीं खाया। एक फौजी का बेटा होने के नाते नहीं; my father is 44 Commissioned Army Officer. I am very angry. मैं समझता हूं कि the whole country is angry.

मैं आदरणीय मुख्य मंत्री जी द्वारा 20 लाख रुपये की ऐक्सग्रेशिया ग्रांट की घोषणा करने के लिए इनको धन्यवाद देना चाहूंगा। ऐसे परिवारों के लिए जो कुछ भी करना पड़े, वह करना चाहिए। वह शहीद जवान खुद केवल 30 साल का था और उसका छोटा बेटा अभी सिर्फ 30 दिन का है। We have lost 42 brave soldiers. कर्नल साहब (कर्नल इन्द्र सिंह), मैं आपको थोड़ा कॉरैक्ट करना चाहूंगा, मेरे गांव का ही मेरा एक कजिन वहां श्रीनगर में सी0आर0पी0एफ0 में तैनात है। मेरी उससे रात को भी बात हुई और सुबह भी हुई। उन्होनें मुझे बताया कि ऐस्कोर्ट के बीच फायर लेन से घुसकर उस बंदे ने गाड़ी मारी and before this incident he has uploaded his videos also. वह 21 साल का दसवीं क्लास का ड्रोप-आउट है जो कि एक आरे पर काम करता था। वहां पर मिलिटैंसी का एक फैशन आ गया है और ये जो कमांडर बन रहे हैं उनमें से किसी की भी जिन्दगी 6 महीने से ज्यादा नहीं है। उन्हें भी लग रहा है कि वहां पर अब आतंकवाद लास्ट स्टेज पर है। मगर लास्ट स्टेज के होते हुए भी जिस तरह से यह घटना घटी है और जिसमें हमारे 42 जवान शहीद हुए हैं, I join Col. Sahab, it is a very huge figure. In any war 42 means a full skilled war, 42 casualties mean a head on war. एक आमने-सामने की वॉर में इतनी ज्यादा केजुअल्टी नहीं होती जितनी आज वहां पर हो गई। आर0डी0 शैलिंग में इतनी ज्यादा केजुअल्टी नहीं होती जितनी एक सुसाईड बॉम्बर ने आज हमारे देश में की है। I joined myself in the condolences for these 42 brave hearts and I pray to the God कि इन सबके परिवारों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे तथा शहीद हुए जवानों की आत्मा को शांति मिले।

आपने समय दिया, आपका धन्यवाद। जय हिन्द।

अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य, श्री विक्रमादित्य सिंह जी।

श्री विक्रमादित्य सिंह (शिमला ग्रामीण) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री महोदय ने कश्मीर में सी0आर0पी0एफ0 के शहीद हुए 42 जवानों के लिए जो आज यहां शोक प्रस्ताव पारित किया है उसमें हम भी अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करते हैं। हम एक युनिलेटरल आवाज में केवल यही कहना चाहते हैं कि हमारे देश के आदरणीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी इस संदर्भ में जो भी कदम उठायेंगे उसमें पूरा देश कन्धे-से-कन्धा मिलाकर

उनके साथ खड़ा है। भविष्य में इस प्रकार की घटना न घटे इसके लिए हमारे देश के सिक्योरिटी अपेरेटस को पूरी तरह से मजबूत करने की आवश्यकता है। साथ-ही-साथ, मैं यहां पर यह भी कहना चाहता हूं कि आज हमें खास तौर से स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी याद आ रहे हैं जिन्होंने कश्मीरियत, इन्सानियत और जम्हूरियत का नारा दिया था। जिस तरह से कश्मीर को हिन्दुस्तान के साथ लाने की बात केवल स्ट्रेटेजिक रूप से ही नहीं बल्कि इन्सानियत के तौर पर उन्होंने शुरू की थी आज हमें उस बारे में और ज्यादा मजबूती से काम करने की आवश्यकता है। मैं पूर्व रॉ चीफ ए0एस0 दुल्त की 'वाजपेयी इयर्स' नामक किताब पढ़ रहा था। उस किताब में वाजपेयी साहब के कार्यकाल की जो उन्होंने अंगेजमैंट्स कश्मीर के साथ की है। कश्मीर के अलग-अलग चाहे वह सेपेरेटिस्ट्स लीडर्ज हैं, चाहे वहां के रेडिकल लीडर्ज हैं या वहां के इस्लामिस्ट्स लीडर्ज हैं; उनके साथ जिस तरह की अंगेजमैंट करने का प्रयास किया था और उनको यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया था कि वे भी हिन्दुस्तान का एक अद्भुत अंग है। हमारा जहां एक ओर मिलिटरी रिस्पोंस जरूरी है वहीं हमें अपना सिक्योरिटी अपेरेटस मजबूत करने की भी आवश्यकता है। उसके साथ-साथ यहां पर जैसे माननीय सदस्य, श्री राकेश सिंघा जी ने अपनी बात रखी है कि

15.2.2019/1150/TCV/YK/1

हमें इंसानियत, कश्मीरियत और जम्हूरियत का एक नारा दिया गया था, उस दिशा में भी आने वाले समय में आगे बढ़ने की आवश्यकता है। आज पाकिस्तान इस बात को भलीभान्ति जानता है कि कंवैंशनल वॉरफेयर में वह हिन्दुस्तान का मुकाबला नहीं कर सकता है। पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति जिया-उलहक ने जो एक नारा दिया था कि 'Bleed India with a Thousand Cuts' आज उस चीज को देश के अंदर अपनाया जा रहा है। आज पाकिस्तान जानता है कि कंवैंशल वॉरफ़ेयर से इण्डिया का मुकाबला नहीं किया जा सकता है। Because of these radical elements यहां के युवाओं को बहकाया जा रहा है, उनका Redicalization, Wahhabism, Islamization हो रहा है। इसको भी हमें चैक करने की आवश्यकता है। जैसा यहां पर अन्य माननीय सदस्यों ने भी कहा है, यह बहुत

चिंता का विषय है, इसमें जो explosive laden vehicle थी, वह पाकिस्तान से हिन्दुस्तान में नहीं आई है और इसमें जो 21 साल का युवा इंवॉल्व था, वह भी कश्मीर का ही निवासी है। एक ओर इसमें जहां इंवैस्टिगेटिंग एजेंसियों के माध्यम से कड़ी इंवेस्टिगेशन करनी की आवश्यकता है। As a youth, I think it is very important we have to realize that the kind of radicalization that is happening in Kashmir today. आज अगर हम कश्मीर में जाएं तो वे हमें कहते हैं कि आप हिन्दुस्तान से आए हैं। वे अपने आपको हिन्दुस्तान का हिस्सा नहीं मानते हैं। And this is a hard fact that we have to accept and the constant engagement with the people of Kashmir needs to be taken to new thresholds in the time to come.

मैं माननीय मुख्य मंत्री जी का धन्यवाद करना चाहूंगा कि इन्होंने यह प्रस्ताव यहां पर प्रस्तुत किया है। जैसा मैंने कहा है कि with a equal military and equal strategic response के साथ-साथ एक नये स्तर पर जाने की आवश्यकता है क्योंकि पाकिस्तान चाहता है कि यह मुद्दा हमेशा अंतर्राष्ट्रीय सुर्खियों में बना रहे। वह चाहता है कि यह द्विपक्षीय मुद्दा न रहे, इसको इंटरनेशनलाइज्ड करने और अलग-अलग जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर के फॉर्म्ज़ हैं, चाहे संयुक्त राष्ट्र है या अन्य कोई फ़ॉर्म्ज़ हैं, वहां इस मुद्दे को उठाया जाए। हिन्दुस्तान हमेशा इस बात को चाहता है कि यह एक द्विपक्षीय मुद्दा बना रहे। इसलिए इसको इस दृष्टिकोण से भी देखने की आवश्यकता है।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने जो 20 लाख रुपये की राशि, हिमाचल प्रदेश के शहीद जवान के परिवार को देने की घोषणा की है, मैं उसका स्वागत करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने इस गंभीर विषय पर बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका दिल की गहराइयों से धन्यवाद करता हूं।

श्री सुरेश कुमार कश्यप (पच्छाद): माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले कल जो दुःखद घटना पुलवामा में हुई और जो शोक प्रस्ताव माननीय मुख्य मंत्री जी इस माननीय सदन में लाए हैं, मैं भी उसमें अपने आपको शामिल करता हूं। कल जो घटना हुई वह निश्चित रूप से बहुत ही दुःखद घटना है। आज पाकिस्तान की ओर से आतंकवाद फैलाया जा रहा है क्योंकि जब-जब भी सीधी लड़ाई हुई, चाहे 1965, 1971 या 1999 में कारगिल का युद्ध हुआ, हर बार उसको मुहं की खानी पड़ी है। आज भारतीय सेना जिस तरह से "ऑपरेशन ऑल

आउट" चलाकर चुन-चुनकर आतंकवादियों को मार रही है, शायद उसी का नतीज़ा है कि पाकिस्तान अब इस प्रकार के युद्ध को बढ़ावा दे रहा है। उसका उदाहरण कल हमें देखने को मिला। जब भारतीय सी0आर0पी0एफ0 का काफ़िला जा रहा था, जिसमें 78 गाड़ियां और लगभग 2500 सी0आर0पी0एफ0 के जवान थे, उनके साथ एक स्कॉरपियो गाड़ी को टकरा दिया। जिसमें 42 जवान शहीद हो गए। इसमें कांगड़ा के एक जवान श्री तिलक राज भी शहीद हो गए। यह हादसा इतना भयानक था कि इसमें शहीदों के शवों की पहचान तक नहीं हो पा रही है।

15-02-2019/1155/NS/YK/1

इस प्रकार का बहुत ही दुःखद और कायरतापूर्ण कार्य विशेष रूप से पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद के द्वारा किया गया है। इस दुःख की घड़ी में, मैं भी अपने आपको इस शोक प्रस्ताव में सम्मिलित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने भी वायु सेना में साढ़े सोलह साल नौकरी की है और जिस समय कारगिल का युद्ध हुआ था, उस समय मैं भी जैसलमेर में वायु सेना के बेस कैम्प में सेवारत था। उस समय वहां पर आर्मी को आने में तीन दिन का समय लगा था। जब तक हमारी आर्मी वहां नहीं आई तब तक बी0एस0एफ0 के साथ, वहां पर भारतीय वायु सेना की साउथ वेस्टर्न कमांड मौजूद रही थी और यह कमांड विशेष रूप से जैसलमेर सैक्टर में है तथा पाकिस्तान के बहुत नजदीक है, उस समय भारतीय वायु सेना ने सीमा की रक्षा में जब तक थल सेना वहां नहीं पहुंची थी, अपनी सेवाएं दीं थी। मैं भी पहले कारगिल और फिर कसौली में रहा क्योंकि हमारा कम्युनिकेशन सैंटर वहां पर है तथा एक्टिवली मुझे भी उस समय इसमें पार्टिसिपेट करने का मौका मिला था।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आज भी कहता हूं कि अगर सेना को हमारी आवश्यकता होगी तो आज भी हम उसी प्रकार से अपनी सेवाएं देने के लिए तैयार हैं। इस दुःख की घड़ी में, मैं भगवान से यही प्रार्थना करूंगा कि जो हमारे 42 सैनिक शहीद हुए हैं, उनके परिवारों को इस दुःख की घड़ी में, इस संकट से उभरने की भगवान शक्ति दे। जो सैनिक इसमें घायल हुए हैं, वे भी जल्दी स्वस्थ हों, मैं भगवान से ऐसी प्रार्थना करूंगा। मैं माननीय मुख्यमंत्री महोदय का भी धन्यवाद करना चाहूंगा कि इन्होंने शहीद के परिवार को

20 लाख रुपये देने की घोषणा की है। हमारा एक सैनिक कांगड़ा जिले से शहीद हुआ है और उसके परिवार को यह राशि देने की घोषणा की है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे से पूर्व वक्ताओं ने भी कहा कि आज बहुत ही दुःखद घड़ी है। हम सब इस दुःख की घड़ी में उन सभी परिवारों के साथ सम्मिलित हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्षः माननीय सदस्य, श्री नन्द लाल जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

श्री नन्द लालः माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री महोदय श्रद्धांजलि के लिए जो शोक प्रस्ताव यहां पर लाए हैं, मैं भी अपने आपको इस प्रस्ताव में शामिल करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सभी माननीय सदस्यों ने इस पर जिक्र किया है, मैं सिर्फ दो-तीन बातें कह कर अपनी बात समाप्त करूंगा। Conventional War को एडरेस करना, उसको लड़ने का एक सिस्टेमैटिक तरीका होता है, टेकनीक्स होती है, ईच्छा होती है और इसमें हम लड़ सकते हैं। लेकिन जो आतंकवाद है, यह एक ऐसी समस्या है जिसका समाधान निकालना बहुत जरुरी है। It is a international problem. माननीय अध्यक्ष महोदय, आज कश्मीर ही क्यों बेस बना हुआ है? I agree with Hon'ble Member, Sh. Vikramaditya Singh Ji. जब तक वहां ये कश्मीरी प्रोब्लम क्रिएटर्ज़ या जो प्रोब्लम्ज़ हैं, उनको सोर्ट आउट नहीं किया जाएगा तब तक आतंकवादी वहां पर रहेंगे। Complete logistic support और रहने की कंपलीट व्यवस्थाएं आतंकवादियों को वहां पर अबलेवल हैं। अब प्रश्न यह है unlike conventional warfare कि आतंकी जो ऑलरेडी हमारी जगह में है, जैसे माननीय सदस्य पठानिया जी ने कहा कि अब कम हो गए हैं। भगवान करे, ऐसा ही हो, आतंकवादी कम हो गए हों, लेकिन ऐसा नहीं है। ये और बढ़ते जाएंगे। आप सबको पता है कि गाड़ी से टक्कर मारने वाला आदमी जिसने यह काम किया, वहां का लोकल आदमी था और वह पुलवामा का था। लोकल आदमी है, नौजवान आदमी है और इसने गाड़ी से टक्कर मारी और ब्लास्ट हो गया। मैं यह कहना चाहता हूं कि ये लोकल लोग इस काम में क्यों फंसे हुए हैं? माननीय अध्यक्ष महोदय, इसमें नशे की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। There is a organized gang. वे बाहर से यानी पाकिस्तान से नशा कश्मीर में भेजते हैं और इस नशे को इन बच्चों को खिलाते हैं तथा इस नशे से वे उनको इतने आगे ले जाते हैं कि उनकी वापसी बंद हो जाती है। Then ultimately they have to go in

militancy. आतंकवाद में जाना पसंद करते हैं और उनको जाना पड़ता है। वे इतने उल्टे-सीधे काम कर लेते हैं कि वे नॉर्मल समाज में रहने लायक नहीं रहते हैं। इसलिए वे आतंकवाद में जाना उचित समझते हैं।

माननीय सदस्य, कर्नल इन्द्र सिंह और डॉ0 कर्नल धनी राम शांडिल ने यहां पर बहुत टैक्निकल बात की, I will not go into the detail. मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि पिछले कल जो हादसा हुआ है और गाड़ियां श्रीनगर से जम्मू जा रही हैं there is a system और सिक्योरिटी फोर्सिज़ का मूवमैंट सिस्टम है। क्योंकि सिक्योरिटी फोर्सिज की एस्टेबलिशमेंट्स हैं, उनके कैंपस हैं और कानवाई (convoy) है और ये आतंकवादियों के लिए मेन टारगेट्स होते हैं।

15.02.2019/1200/RKS/AG-1

उसके लिए एक पार्टी होती है जिसे रोड ओपनिंग पार्टी कहते हैं, उसको क्लीयर करने के लिए there is a passage given to these people to move. उसमें कमी रह जाती है। उसमें कमी रहना एक मजबूरी भी है। Suppose you are going from Jammu, जम्मू से रास्ते में जगह-जगह इनकी गाड़ियों की चैकिंग होती है। लेकिन जो बीच के रूट्स हैं, जैसे आप अनंतनाग की ओर जाओ, I have served that area, आप जहां भी जाएंगे लेकिन आप हर जगह चैक नहीं कर सकते। इसलिए यह एक आतंकवादी स्टेशन बना हुआ है। यह सब कुछ होते हुए भी सुरक्षा बल की अपनी मजबुरियां हैं। वे लोग देश और हमारी सुरक्षा के लिए वहां पर तैनात हैं। There is a limitation. They need Government support. इसमें कोई दो राय नहीं है। मगर फिर भी हमको एहतियात बरतने की जरूरत है। सरकार के लैवल पर political will has to be there. There is no doubt in this. अगर हम बातचीत करके या किसी भी तरह इस मामले को सैटल करने की कोशिश करेंगे फिर भी यह समस्या खत्म नहीं होगी। आप जानते हैं कि वहां पर आतंकवादी बढ़ते ही जा रहे हैं। हम अखबारों में पढ़ते हैं और लोगों से भी सुनते हैं कि वहां पर इतने आतंकवादी मारे गए। वहां पर आतंकवादियों की संख्या कम होती जा रही है। लेकिन हमें टारगेट बनाने की आवश्यकता नहीं है। But still effect remains. Militancy is there. Militants are there. उसमें कोई दो राय नहीं है। आतंकवाद को खत्म करने के लिए हमें

गवर्नमैंट लैवल पर द्विपक्षीय वार्ता व सिक्योरिटी फोर्स के मनोबल को बढ़ाना चाहिए। वहां पर ज्यादा सेना तैनान करने की आवश्यकता है। वहां के जो स्थानीय लोग है वे आतंकवादियों के बहुत ज्यादा प्रभाव में रहते हैं और वे कहते हैं कि आर्मी को यहां से हटाओ, वहां से हटाओ। उनके बचाव में Human Rights Commission और ऐसी बहुत सारी चीजें हैं जो आर्मी को हटाने के लिए दखल देती है। इन सब अंदरूनी कठिनाइयों का सामना हमारी फौज को करना पड़ता है। इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए हमें अपने शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करना बहुत जरूरी है। जो शहीद शहादत लेता है वह देश के लिए है। वे अपने घर का काम करने के लिए वहां पर तैनात नहीं थे। जो आतंकवादी होते हैं वे बहुत पढे-लिखे, ट्रेंड और इंटैलिजैंट होते हैं और इसी इंटैलिजैंस का फायदा उठाकर उन्होंने इस वारदात को अंजाम दिया। लेकिन कहां चूक हुई और किस चीज का उन्होंने फायदा उठाया, यह देखना आवश्यक है। जो यह ह्यूमैन बम्ब ऐसे हमलों को अंजाम देने आते हैं, वे सुसाइडल हैं, उन्हें तो मरना ही है। इसका उदाहरण चाहे पार्लियामेंट अटैक हो या कोई अन्य अटैक हो, यह मैटर नहीं करता। लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा कि सेना का मनोबल बढ़ाने के लिए सरकार की ओर से जो भी उचित कदम उठाने की आवश्यकता है, वे उठाए जाने चाहिए। दूसरा, मैं कहना चाहूंगा कि इसके लिए हमें द्विपक्षीय वार्ता और दूसरी चीजों को बढ़ावा देना चाहिए। मैं उन शहिदों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और माननीय मुख्य मंत्री जी का भी धन्यवाद करना चाहता हूं कि इन्होंने हिमाचल प्रदेश से शहीद हुए श्री तिलक राज को एक्सग्रेशिया ग्रांट देने की घोषणा की है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, आपका धन्यवाद।

अध्यक्षः श्री बिक्रम सिंह जरयाल।

श्री बिक्रम सिंह जरयालः माननीय अध्यक्ष महोदय, जो पिछले कल हमारे सुरक्षा बल पर घटना घटी है और उस घटना पर माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने जो शोकोद्गार प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, उस में मैं भी अपने आप को सम्मिलित करता हूं। यह बहुत दुःख की बात है और मैं सीधे तौर पर इसकी निंदा करता हूं। मैं माननीय सदन से यह आग्रह करना चाहूंगा कि यहां से यह प्रस्ताव पारित किया जाए कि पाकिस्तान के साथ सीधी कार्रवाई की जाए। क्योंकि किसी चीज की कोई सीमा होती है और वे सभी सीमाओं को पार कर गए हैं। इस

घटना को सुनकर मैंने रात से खाना नहीं खाया है। मैंने अपनी तरफ से अपने यूनिट कमांडैंट और चीफ ऑफ आर्मी को मेल भेजी है कि यदि देश को मेरी जरूरत है तो मैं इसके लिए तैयार हूं। मुझ से पहले भी इस घटना पर बहुत से वरिष्ठ माननीय सदस्यों ने अपना-अपना वक्तव्य दिया है। हम सभी को एक होकर इस माननीय सदन से प्रस्ताव भेजना चाहिए कि पाकिस्तान के साथ सीधी कार्रवाई की जाए। अगर इसके लिए हमारी जरूरत है तो हम इसके लिए तैयार है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जो जवान शहीद हुए हैं, उनकी आत्मा की शांति के लिए मैं उनको श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं और साथ ही भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को इस दुःखद घड़ी में दुःख सहन करने की शक्ति मिले। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका धन्यवाद।

15.02.2019/1205/बी0एस0/ए0जी0-1

श्री आशीष बुटेल (पालमपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, जो माननीय मुख्य मंत्री जी ने शोकोद्गार प्रस्ताव सदन में रखा है उसमें मैं अपने आप को भी शामिल करता हूं। इसमें कोई दोराय नहीं कि यह बहुत बड़ी दुःखद घटना है और एक ऐसी घटना जिसमें अभी तक पता नहीं लग रहा है कि इस घटना में कहां पर चूक हुई है? अगर चूक हुई है तो भारत में रहने वाले लोगों के द्वारा चूक हुई है या बाहरी देश का इस घटना में हाथ है। यह एक दुखद तो है ही साथ ही हमारे शहीदों ने हम सब को सुरक्षित रखने के लिए शहादत दी है। वीर भूमि हिमाचल प्रदेश के मेरे ही जिला से संबंध रखने वाले ज्वाली क्षेत्र के अमर शहीद तिलक राज जी ने अपनी शहादत दी है। माननीय राकेश पठानिया जी अभी बता रहे थे कि वे अपने छोटे-छोटे दो बच्चे और अपनी पत्नी को पीछे छोड़ कर यहां से वीरगति को प्राप्त हुए हैं। मैं माननीय मुख्य मंत्री जी का धन्यवाद करता हूं कि आपने एक्सग्रेशिया के रूप में 20 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की है। हम लोगों की भी जहां पर जरूरत हो हम लोग भी शोक की इस घंडी में उनके साथ खड़े हैं। मैं उस इलाके से आता हूं जहां पर 40 किलोमीटर के दायरे के अंदर चार कंटोनमेंट एरियाज स्थापित हैं। इसलिए आर्मी के साथ

हमारा भी एक गहरा नाता है। चाहे वह धर्मशाला की कंटोनमेंट हो, चाहे योल की कोर हो, पालमपुर होल्टा की डीविजनल हैडक्वाटर हो, अहलालाल की कंटोनमेंट हो। इन सब लोगों के साथ बहुत अच्छा और गहरा नाता रहता है। इनसे आर्मी के बारे में और हमारी फोर्सिज के बारे में हमेशा पता चलता है कि ये किस तरह हमेशा हमारी रक्षा के लिए तैयार रहते हैं। इन सब चीजों के बारे में इनसे सुनने को मिलता है। पालमपुर से भी कई जवानों ने शहादत दी है। जब मेरे विधान सभा चुनाव क्षेत्र की बात आती है तो मैं अपने आप में बहुत गर्व महसूस करता हूं। दो परमवीर चक्र विजेता पालमपुर से रहे। कारगिल की लड़ाई के हीरो कैप्टन अभिमन्यु सौरभ कालिया जी यहां से रहे। मेजर सुधीर वालिया जी यहां से रहे, कैप्टन बिक्रम बतरा जी जो परमवीर चक्र विजेता हैं वे यहां से रहे हैं। मेजर सोमनाथ शर्मा पहले परमवीर चक्र विजेता यहां से रहे हैं। इन सबने हमें सुरक्षित रखने के लिए अपनी शहादत दी है। एक बार फिर से मैं अपनी श्रद्धांलजि इन सब शहीदों के नाम समर्पित करता हूं और जो लोग अभी घायल हैं उनके भी जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया आपका धन्यवाद।

अध्यक्ष : माननीय वन मंत्री जी।

वन मंत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज माननीय मुख्य मंत्री जी ने जो शोकोद्गार यहां पर प्रकट किया है कि कल सांय 3.15 मिनट के आस-पास पुलवामा में जिस प्रकार आतंकवादी हमले में हमारे 42 सी0आर0पी0एफ0 के जवान शहीद हुए यह बहुत दुखद घटना है। यह कायरतापूर्ण आतंकवादी हमला हुआ है और आज यह लगता है कि भारत के बाहर जो दुश्मन हैं उससे लड़ना तो आसान है लेकिन देश के भीतर जो दुश्मन बैठा है वह ज्यादा खतरनाक है। भारत सरकार को दोनों मोर्चों पर लड़ने की आवश्यकता है। जो देश के भीतर इस प्रकार के लोग हैं उनके खिलाफ भी सख्त-से-सख्त कार्रवाई करनी चाहिए और देश के बाहर भी यह कार्रवाई होनी चाहिए। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज यह सदन शोक प्रकट कर रहा है और माननीय मुख्य मंत्री जी ने यहां पर राशि की घोषणा भी की है। लेकिन मुझे लगता है कि जब जवान शहीद होते हैं तो प्रारंभ में सब जगह सबके प्रति

दुःख प्रकट करते हैं परंतु बाद में उन शहीदों के परिवार, व्यावहारिक रूप में उनके बच्चे, उनकी पत्नियां, उनके माता-पिता न जाने कितनी प्रकार की कठिनाइयों को झेलते हैं । इन सब का अंदाजा हम सब नहीं लगता पाते। मेरा यह सुझाव भी है कि कुछ-न-कुछ हमें ऐसा करना चाहिए कि लम्बे समय तक उन परिवारों के लिए कोई कठिनाई न आए। इस ओर अवश्य विचार करना चाहिए। मैं इन 42 शहीदों को श्रद्धांजलि देता हूं और जो अभी घायल हैं उनको ईश्वर शीघ्र स्वस्थ करे। इतना कहते हुए माननीय अध्यक्ष महोदय आपने मुझे बोलने का अवसर दिया आपका धन्यवाद।

15.02.2019/1210/DT/DC-1

श्री लखविन्द्र सिंह राणा (नालागढ़) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय,जो प्रस्ताव माननीय मुख्यमंत्री जी ने इस माननीय सदन में रखा है उसमें शामिल होने के लिए मैं भी खाड़ा हुआ हूं। यह एक अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण घटना है कि हमारे सैनिकों के ऊपर कायरतापूर्ण हमला हुआ है। विदेशी आतंकवादी जो पाकिस्तान से आकर यहां ऐसी घटना कर रहे है जिसमें हमारे 40 जवान शहीद हो गए हैं। इसमें एक हमारे हिमाचल प्रदेश के ज्वाली से सैनिक तिलक राज भी इस हमले में शहीद हुआ है। लेकिन बड़े दुख की बात है कि हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान यु0एन0ओ0 को बताने के ऐसी घटना को बार-बार अंज़ाम दे रहा है । हमारे हिन्दुस्तान की जो सरकार है उसको चुनौती देने के लिए पाकिस्तान हमेशा ऐसे कार्य करता है। लेकिन आज यह जो घटना हुई यदि सीमा के ऊपर होती तो इतना दुखः नहीं होता क्योंकि बोर्डर के ऊपर हर रोज ऐसी घटनाएं घटती है। लेकिन हमारे देश के अन्दर कश्मीर के अन्दर पुलवामा में यह घटना हुई है । ठीक कहा माननीय सदस्य कर्नल इन्द्र सिंह जी ने कि यहां पर सिक्योरिटी की भी हमारी कमी रही है क्योंकि काफिला इतनी बसों का जा रहा था उसके बीच में आकर एक आत्मघाती कार का हमला होना यह हमारी सिक्योरिटी के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है । ऐसी घटनाएं बार-बार न हो मैं केन्द्र सरकार के समक्ष भी यह बात कहना चाहता हूं कि बार-बार जो यह हमले पाकिस्तान की तरफ से होते हैं उनको भी रोकना चाहिए । हमारे हिमाचल प्रदेश का जो जवान इस

अतंकवादी घटना में शहीद हुआ है, मैं मुख्यमंत्री जी का धन्यवाद करना चाहता हूं। जिन्होंने 20 लाख की राशी शहीद परिवार के लिए दी यह एक बहुत बड़ी बात है । मैं सदन में देख रहा था हमारे माननीय आई0पी0एच0 मंत्री महेन्द्र सिंह जी और माननीय सदस्य, सुरेश कुमार कश्यप जी माननीय बिक्रम सिंह जरयाल जी जोकि अर्मी से सेवानिवृत हैं और आज भी इनमें अपने हिन्दुस्तान की रक्षा करने के लिए एक जाजबा है जैसा कि इन्होंने कहा अगर हमारी जारूरत देश के लिए होगी तो हम सब कुछ न्यौछाबर करके अपने देश की रक्षा करने के लिएम फिर से बोर्डर पर जाने के लिए तैयार है यह एक बहुत बड़ी बात है ।

मैं खुद एक स्वतंत्रता सेनानी परिवार से आता हूं। मेरे पिता जी सरदार लक्षमण सिंह जी एक स्वतंत्रता सेनानी थे। जो 12 साल तक आंग्रेजो की जेल में कैद रहे । लेकिन आज जो यह घटना घटी है इस घटना का हमें बहुत दुखः हुआ है और मैं शहीद परिवारों के प्रति अपनी संवेदनाएं प्रकट करता हूं और जिन परिवारों के साथ यह हादसा हुआ है भागवान इन परिवारों को इस हादसे से उभरने की शक्ति प्रदान करें ताकि वह इस हादसे से संभल सकें। यह जो घटना घटी है मैं भी अपने आप को इस शोक प्रस्ताव में शामिल करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय आपने मुझे बोलने का समय दिया आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

15-02-2019/1215/D.C./एन.जी./1

अध्यक्ष : 14 फरवरी, 2019 दोपहर बाद 3:15 बजे जम्मू कश्मीर के पुलवामा क्षेत्र में जो बरर्बता पूवर्क फिदाईन हमला हुआ और हमारे 42 जवान शहीद हो गये, अनेक जवान गम्भीर रूप से घायल हुए हैं। इस शोक की घड़ी में माननीय सदन के नेता द्वारा जो प्रस्ताव इस माननीय सदन में लाया गया और सदन के अनेक माननीय सदस्यों ने अपने उद्गार इसमें प्रस्तुत किये, मैं भी अपने आप को इस शोक की घड़ी में उन उद्गारों के साथ शामिल करता हूं। ठीक कहा कि भारत की सैन्य शक्ति, भारत के सैनिकों का मनोबल और लगातार हुए युद्धों में पाकिस्तान ने भारत की सामरिक शक्ति को अच्छे से टैस्ट किया चाहे वह 1965 का युद्ध हो , चाहे वह 1971 को युद्ध हो। श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में 1971 के युद्ध में भारत की सेना ने जिस तरह से पाकिस्तान के दो टुकड़े किये, मुझे स्मरण

आता है कि उस समय पूरा देश प्रधानमन्त्री जी के साथ चट्टान की तरह खड़ा था और भारत इस युद्व में सफल हुआ । श्रद्धेय स्व0 अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उनको रणचण्डी की संज्ञा दी । उसके पश्चात पाकिस्तान ने प्रोक्सी-वार यानी छदमयुद्व को अपना हथियार बनाया। 1980 से लेकर आज तक लगभग 39 वर्षों से जम्मू-कश्मीर छदमयुद्व को झेल रहा है। मेरे देश के जवानों ने सीमाओं की रक्षा के लिए अपने जीवन को होम दिया। एक अनुमान के लगभग 70 हज़ार सैनिकों ने इस 40 वर्षों में सीमाओं की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया।

मेरे देश का पूर्वान्चल, नागालैण्ड, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम, यह अलगाववाद के साथ उसी प्रकार से जूझ रहा था जिस प्रकार कश्मीर आज जूझ रहा है। सरकार के विहंगम प्रयासों से आज पूर्वान्चल भारत की मुख्यधारा के साथ जुड़ा हुआ दिखाई देता है, विकास की गति में देश के साथ जुड़ा हुआ दिखाई देता है। भारत का मध्यभाग, वो जिस तरह से माओवाद की गतिविधियों के अन्दर पूरी तरह से लगा हुआ था, उसके अन्दर भी हमारे देश के सुरक्षा बलों ने भारी कामयाबी हासिल की है। कश्मीर में भी पिछले दिनों आतंकवादियों का सर्वाधिक सफाया हुआ है परन्तु पाकिस्तान के साथ और अधिक जोर व शक्ति के साथ व ताकत के साथ डील करने की अवश्यकता है। हमारे देश का नेतृत्व इस मामले में सक्षम है। हमारी सेना, हमारे मिलीटरी फोर्सिस, हमारी पैरा-मिलीटरी फोर्सिस पूरी तरह से सक्षम है।

15/02/2019/1220/RG/HK/1

परन्तु यह जो बर्बरतापूर्ण हमला हुआ है, उसमें हमारे 42 जवान शहीद हुए हैं। यह बहुत दुखदायी और बहुत कष्टदायी वक्त है। इससे पूरा देश सन्न है, पूरा देश व्यथित एवं क्रोधित है और इस समय मेरा यह विधान सभा परिसर भी शोकमय है। हम इस शोक की घड़ी में उन परिवारों के साथ खड़े हैं, उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं और जहां प्रभु उनको शक्ति प्रदान करे, वहीं यह मेरा भारत दुनिया में शक्तिशाली भारत बनकर उभरे, दुनिया के अंदर ताकतवर और विकासोन्मुख भारत बनकर उभरे। भारत आगे बढ़ रहा है, दुनिया की और पड़ोसी ताकतें उसे रोकने का प्रयास कर रही हैं। मेरा

मानना है कि यह नियति है कि यह सदी भारत की सदी है। दुनिया इसको कितना भी रोकना चाहेगी, रोक नहीं सकेगी। मेरे देश का प्रत्येक भारतवासी, 125 करोड़ जो देवी-देवता स्वरूप देशवासी हैं, वे भारत के लिए एक होकर इसकी रक्षा के लिए और इसके विकास के लिए अपना सर्वस्व होम करेंगे। इस दुख की घड़ी में मेरी सभी से प्रार्थना है कि वे चन्द क्षण मौन के लिए अपने स्थान पर खड़े हो जाएं।

(सदन में उपस्थित सभी ने अपने-अपने स्थानों पर खड़े होकर कुछ क्षण के लिए मौन रखा।)

अब माननीय मुख्य मंत्री जी प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे कि इस सदन की आज दिनभर की कार्यवाही को स्थगित किया जाए।

मुख्य मंत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि दिनांक 14-02-2019 को जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले के लेथपोरा में सी.आर.पी.एफ. के जवानों पर हुए आतंकी हमले के मद्देनज़र, शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इस माननीय सदन की आज की कार्यवाही स्थगित की जाए।

श्री मुकेश अग्निहोत्री : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सदन के नेता द्वारा रखे गए प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं।

अध्यक्ष : यदि माननीय सदन की अनुमति हो तो आज पूरे दिन के लिए सदन की कार्यवाही को स्थगित किया जाए?

इससे पूर्व कि सदन की कार्यवाही को स्थगित किया जाए, माननीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा हिमाचल प्रदेश विधान सभा के माननीय सदस्यों के सम्मान में आज दिनांक 15 फरवरी, 2019 को आयोजित रात्रि भोज को कश्मीर में हुए आतंकी हमले के दृष्टिगत राज्यपाल महोदय ने रद्द कर दिया है।

अब इस माननीय सदन की बैठक शनिवार, दिनांक 16 फरवरी, 2019 के पूर्वाह्न 11.00 बजे तक स्थगित की जाती है।

शिमला-171004
दिनांक : 15 फरवरी, 2019

यशपाल शर्मा,
सचिव।